اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत एतिकाफ़ की निय्यत की)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब कभी दाख़िले मस्जिद हों, याद कर के एतिकाफ़ की निय्यत कर लिया करें कि जब तक मस्जिद में रहेंगे, एतिकाफ़ का सवाब मिलता रहेगा । याद रखिए ! मस्जिद में खाने, पीने, सोने या सह़री, इफ़्तारी करने, यहां तक कि आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ! अलबत्ता अगर एतिकाफ़ की निय्यत होगी, तो येह सब चीज़ें ज़िम्मन जाइज़ हो जाएंगी । एतिकाफ़ की निय्यत भी सिर्फ़ खाने, पीने या सोने के लिए नहीं होनी चाहिए बल्कि इस का मक़्सद **अल्लाह** करीम की रिज़ा हो । **फ़तावा शामी** में है **:** अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना, सोना चाहे, तो एतिकाफ़ की निय्यत कर ले, कुछ देर ज़िक्रुल्लाह करे फिर जो चाहे करे (यानी अब चाहे तो खा, पी या सो सकता है) ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है **:**

مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ يَوْمَ الْجُمُعَةِ كَانَتْ شَفَاعَةٌ لَّهٗ عِنْدِيْ يَوْمَ الْقِيَامَة

जो मुझ पर रोज़े जुम्आ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...جمع الجوامع للسیوطی ج۷ص۱۹۹ حدیث ۲۲۳۵۲

बयान सुनने की निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''اَفْضَلُ الْعَمَلِ اَلنِّيَّةُ الصَّادِقَةُ'' सच्ची निय्यत सब से अफ़्ज़ल अ़मल है।(1)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हर काम से पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें करने की आ़दत बनाइए कि अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है। बयान सुनने से पेहले भी अच्छी अच्छी निय्यतें कर लीजिए। मसलन निय्यत कीजिए : ❖ इ़ल्म सीखने के लिए पूरा बयान सुनूंगा। ❖ बा अदब बैठूंगा। ❖ दौराने बयान सुस्ती से बचूंगा। ❖ अपनी इस्लाह़ के लिए बयान सुनूंगा। ❖ जो सुनूंगा, दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मौत ताक में है

ह़ज़रते इयास बिन क़तादा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपनी क़ौम के सरदार (Head) थे। एक दिन आप ने अपनी दाढ़ी में एक सफ़ेद बाल देखा तो दुआ़ की : या **अल्लाह** पाक ! मैं अचानक होने वाले ह़ादिसात से तेरी पनाह चाहता हूं, मुझे मालूम है कि मौत मेरी ताक में है और मैं इस से बच नहीं सकता फिर वोह अपनी क़ौम के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाने लगे : ऐ बनू साद ! मैं ने अपनी जवानी तुम पर वक़्फ़ (Dedicate) कर दी थी, अब तुम मेरा बुढ़ापा मुझे बख़्श दो फिर आप अपने घर तशरीफ़ लाए और इबादत में मसरूफ़ हो गए, यहां तक कि आप का विसाल हो गया।(2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...جامع صغیر، صفحہ: ۸۱، حدیث: ۱۲۸۴

2...बह़रुद्दुमूअ़, सफ़ह़ा : 112

हम इ़ब्रत क्यूं नहीं लेते ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे अस्लाफ़, बुज़ुर्गाने दीन, **अल्लाह** पाक के इन नेक बन्दों की सोच कैसी पाकीज़ा थी, येह इ़ब्रत व नसीह़त (*Advice*) ह़ासिल किया करते थे । देखिए ! ह़ज़रते इयास बिन क़तादा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दाढ़ी मुबारक में एक सफ़ेद बाल देखा, बस येह एक सफ़ेद बाल ही उन को नसीह़त के लिए काफ़ी हो गया, आप ने इस से इ़ब्रत पकड़ी, नसीह़त ह़ासिल की और इ़बादत में मसरूफ़ हो गए ।

आह ! हम पर ग़फ़्लत (*Heedlessness*) त़ारी रेहती है, हम नसीह़त नहीं लेते, हम निगाहे इ़ब्रत से मह़रूम हैं, काएनात का ज़र्रा ज़र्रा हमें पैग़ामे फ़ना दे रहा है, येह उठते जनाज़े, क़ब्रिस्तान की बढ़ती आबादी, ढलती जवानी, येह गुज़रते दिन, ढलती चांदनी, इन सब में इ़ब्रत है, येह सब चीज़ें हमें बता रही हैं कि ऐ ग़ाफ़िल इन्सान ! मौत आने वाली है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

इ़ब्रत लेने की तरग़ीब

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! क़ुरआने करीम ने हमें जगह जगह इ़ब्रत लेने की तरग़ीब दिलाई है । पारह 18, सूरए नूर, आयत 44 में **अल्लाह** पाक फ़रमाता है :

يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۴۴﴾

(پارہ:۱۸،سورۂ نور:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : अल्लाह रात और दिन को तब्दील फ़रमाता है, बेशक इस में आंख वालों के लिए समझने का मक़ाम है ।

पारह 30, सूरए नाज़िआ़त में फ़िरऔ़न और उस के लश्कर (*Army*) के ग़र्क़ होने का वाक़िआ़ ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया :

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ یَّخْشٰى ﴿۲۶﴾ (پارہ:۳۰،سورۂ نازعات:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक इस में डरने वाले के लिए ज़रूर इ़ब्रत है ।

अल्लाहु अक्बर ! येह **अल्लाह** पाक से डरने वाले, उलिल अब्सार (यानी ग़ौरो फ़िक्र करने वाले, निगाहे इ़ब्रत रखने वाले) येह **अल्लाह** पाक की निशानियों (*Signs*) को देख कर इ़ब्रत पकड़ते हैं । दिन आया चला गया, सूरज निकला डूब गया, रात आई ढल गई, सितारे निकले ग़ुरूब हो गए । येह सब कुछ, काएनात (*Universe*) का ज़र्रा ज़र्रा खुली किताब है, इस में हमारे लिए नसीह़त है, इ़ब्रत है । काश ! हम डरने वाले, इ़ब्रत लेने वाले, उलिल अब्सार (यानी ग़ौरो फ़िक्र करने वाले, दुन्या को निगाहे इ़ब्रत से देखने वाले) बन जाएं ।

निगाहे इ़ब्रत से मुतअ़ल्लिक़ औलियाए किराम के फ़रामीन

❖ ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो दुन्या को इ़ब्रत की निगाह से देखता और ग़ौरो फ़िक्र करता है, वोह ज़ियादा नेकियां करने में काम्याब (*Successful*) हो जाता है । ❖ ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो इस दुन्या को इ़ब्रत की निगाह से नहीं देखता, आख़िरत की फ़िक्र नहीं करता, उस की नेकियां कम और दिल पर्दे में है । ❖ ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से सुवाल हुवा : आदमी अह्ल एतिबार (यानी इ़ब्रत लेने वाला) कैसे बनता है ? फ़रमाया : जब वोह दुन्या की हर चीज़ के अन्जाम पर निगाह करे और ग़ौर करे कि अ़न क़रीब येह चीज़ फ़ना के घाट उतर जाएगी और इस चीज़ का मालिक भी बहुत जल्द क़ब्र में दफ़्ना दिया जाएगा । ❖ ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का ही फ़रमान है : जिस के घर से जनाज़ा (*Funeral*) निकले और वोह इस से इ़ब्रत न ले, ऐसे शख़्स को इ़ल्म (*Knowledge*), ह़िक्मत और नसीह़त का कोई फ़ाएदा नहीं ।[1]

1 ...تنبیہ المغترین، صفحہ:۵۷

जहन्नम की गर्मी कैसे बरदाश्त कर पाएंगे

❖ **अल्लाह** पाक के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ख़ौफ़े ख़ुदा वाले थे । एक रोज़ आप तन्नूर के पास से गुज़रे, उस में आग जल रही थी, येह देख कर आप को जहन्नम की आग याद आ गई, आप का दिल घबरा गया, बेचैनी (*Restlessness*) में ज़मीन पर गिरे और इतना तड़पे, क़रीब था कि आप के जोड़ जुदा (*Dislocate*) हो जाते । ❖ गर्मी के दिनों में ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام धूप में आते तो केहते : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम तेरे बनाए हुवे सूरज की गर्मी बरदाश्त नहीं कर सकते, तो जहन्नम की गर्मी कैसे बरदाश्त (*Tolerate*) कर पाएंगे ?[1]

हर घर निशाने इ़ब्रत है

ह़ज़रते साइब अ़ब्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दिन ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमारे पास तशरीफ़ लाए । मैं ने पूछा : ऐ अबू बशर ! आप कहां से तशरीफ़ लाए हैं ? फ़रमाया : मैं अपने घर से निकला, तो मुख़्तलिफ़ जगहों से घूमता हुवा तुम्हारे पास आया । मैं जब फ़ुलां के घर के पास से गुज़रा, तो उस घर ने मुझे (ज़बाने ह़ाल से) पुकार कर कहा : ऐ सालेह़ ! मुझ से नसीह़त ह़ासिल कर ! मुझ में फ़ुलां फ़ुलां लोग रेहते थे, अब वोह इन्तिक़ाल कर चुके हैं फिर जब फ़ुलां घर के पास पहुंचा, तो उस घर ने भी मुझे (ज़बाने ह़ाल से) पुकार कर कहा : ऐ सालेह़ ! मुझ से नसीह़त ह़ासिल कर ! मुझ में फ़ुलां फ़ुलां लोग रेहते थे, अब वोह सब मिट्टी में दफ़्न (*Buried*) हैं । ह़ज़रते अबू साइब अ़ब्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इसी त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक एक घर गिनवाते रहे, यहां तक कि हमारे घर तक पहुंच गए ।[2]

---

1 ...تنبیہ المغترین، صفحہ: ۵۷

2 ...حلیۃ الاولیاء، جلد: ۶، صفحہ: ۱۸۲، رقم: ۸۲۲۲

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइए ! येह हमारे बुज़ुर्गाने दीन, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे किस किस अन्दाज़ में इ़ब्रत लिया करते थे । आह ! एक हम हैं ❖ वीरान घर ❖ चूल्हे में जलती आग ❖ सूरज की धूप (*Sun shine*) ❖ सर्दी, गर्मी वग़ैरा से इ़ब्रत लेना तो दूर की बात है, ❖ हमारी आंखों के सामने जनाज़े उठते हैं, हम इ़ब्रत नहीं लेते । ❖ ख़ुद अपने हाथों से मुर्दे क़ब्र में उतारते हैं, तब इ़ब्रत नहीं लेते । ❖ फ़ुलां बिन फ़ुलां अच्छा भला था, अचानक हार्ट अटेक (*Heart attack*) हुवा और मौत के घाट उतर गया । ❖ फ़ुलां नौजवान रोड ऐक्सीडेन्ट में इन्तिक़ाल कर गया, ऐसी बीसियों ख़बरें हम सुनते रेहते हैं फिर भी हम अपनी मौत को याद नहीं करते, इ़ब्रत नहीं लेते । काश ! हम इ़ब्रत लेने और क़ब्रो आख़िरत को याद करने वाले बन जाएं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

(1) उठते जनाज़े मौत के क़ासिद हैं

एक मरतबा ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام **अल्लाह** पाक के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे, ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से मौत के क़ासिदों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा । तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** पाक के नबी عَلَيْهِ السَّلَام ! आप के वालिद, भाई, पड़ोसी और जानने वाले कहां हैं ? फ़रमाया : वोह इन्तिक़ाल कर चुके । मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : येह सब मौत के क़ासिद ही तो हैं, येह सब पैग़ाम (*Massage*) दे रहे हैं कि जैसे वोह दुन्या से चले गए, ऐसे आप भी एक दिन रुख़्सत हो जाएंगे ।[1]

1 ... الکامل فی التاریخ، جلد: ۱، صفحہ: ۱۹۸

इस से बढ़ कर नसीहत क्या होगी ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा : येह उठते जनाज़े क़ब्रिस्तान की बढ़ती हुई आबादी (*Population*), हमारे अ़ज़ीज़, रिश्तेदारों (*Relatives*) का एक एक कर के मरते जाना येह सब मौत के क़ासिद हैं, इस में हमारे लिए सामाने इ़ब्रत है मगर आह ! हम इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते हैं । एक मरतबा ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक जनाज़े में शरीक हुवे, मय्यित को दफ़्न कर लेने के बाद आप ने एक शख़्स से फ़रमाया : आप का क्या ख़याल है ! येह शख़्स (जिसे अभी हम ने दफ़्न किया है) क्या येह दुन्या में वापस आने, ज़ियादा से ज़ियादा नेक आमाल करने और अपने गुनाहों से तौबा करने की ख़्वाहिश नहीं रखता होगा ? उस शख़्स ने कहा : हां ! ज़रूर येह इस की ख़्वाहिश रखता होगा । इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने फ़रमाया : फिर हमारा क्या ह़ाल है ? हम इस मय्यित (*Dead Body*) की त़रह़ क्यूं नहीं हो जाते (यानी हमारे पास अभी मोहलत है, हम दुन्या में मौजूद हैं फिर हम नेकियों की त़रफ़ क्यूं नहीं बढ़ते, गुनाहों से तौबा क्यूं नहीं कर लेते) । येह फ़रमा कर इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ चल पड़े, आप केहते जाते थे : अगर दिल ज़िन्दा हो, तो इन जनाज़ों से बढ़ कर क्या नसीह़त होगी ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या धोके का घर है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! येह सच है, मौत आनी है, हम सब ने इस दुन्या से रख़्ते सफ़र बांधना ही बांधना है । पारह 4, सूरए आले इ़मरान, आयत 185 में **अल्लाह** पाक फ़रमाता है :

1 ... آداب الحسن البصری، صفحہ: ۲۹

كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِؕ وَ اِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَؕ وَ مَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ﴿۱۸۵﴾

(پ۴، آلِ عمران: ۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है और क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे अज्र पूरे पूरे दिए जाएंगे, तो जिसे आग से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, तो वोह काम्याब हो गया और दुन्या की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोके का सामान है ।

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : दुन्या की ह़क़ीक़त (Reality) इस मुबारक जुम्ले ने वाज़ेह़ कर दी । आदमी ज़िन्दगानी पर शैदाई होता है, इसी को सरमाया (Capital) समझता है और इस फ़ुरसत को बेकार ज़ाएअ़ कर देता है, वक़्ते आख़िर इसे मालूम होता है कि इस (ज़िन्दगी) में बक़ा (*Survival*) न थी, इस के साथ दिल लगाना उख़रवी ज़िन्दगी (*Life After Death*) के लिए सख़्त नुक़्सान देह साबित हुवा ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की नसीह़त

ह़ज़रते रबीअ़ बिन सबीह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ने ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से अ़र्ज़ किया : हमें नसीह़त फ़रमाइए ! तो उन्हों ने फ़रमाया : ❖ तुम में से जो तन्दुरुस्त (Healthy) है, उसे बीमारी लगेगी, जो उसे मुसीबत ज़दा (*Distressed*) कर देगी । ❖ जवान को बुढ़ापा आएगा जो उसे फ़ना कर देगा ❖ और बूढ़े को मौत आ जाएगी जो उसे ह़लाक कर देगी । ❖ क्या अन्जाम वैसे नहीं, जैसे तुम सुन रहे हो ? ❖ क्या कल रूह़ जिस्म से जुदा नहीं होगी ? ❖ क्या बन्दा अपने अहल और माल (*Family & wealth*)

से दूर नहीं होगा ? ❖ क्या कल कफ़न में नहीं लिपटा होगा ? ❖ क्या कल क़ब्र में नहीं होगा ? ❖ क्या जिन के लिए बन्दा कोशिश करता रेहता और ग़मगीन होता था, उन दिलों से उस की याद मिट नहीं जाएगी ? ❖ ऐ इन्सान ! जब तुझे मौत आएगी, तो तू न किसी आने वाले का इस्तिक़बाल कर सकेगा, न किसी की मुलाक़ात (Meeting) को जा सकेगा ❖ न किसी से बात कर सकेगा ❖ तुझे पुकारा जाएगा मगर तू जवाब नहीं दे सकेगा ❖ बेशक तेरे हक़ में शहर वीरान (Deserted) हो गए ❖ तेरी आंखें खुली की खुली रेह गईं ❖ रूह परवाज़ कर गई ❖ तेरी औलाद (Children) दूसरों के रहमो करम पर रेह गई ।

माले विरासत सामाने इशरत नहीं, बाइसे इब्रत है

हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने आख़िरी ख़ुत्बे में फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम्हारे पास जो माल है, वोह मरने वालों का छोड़ा हुवा है, बिल आख़िर तुम भी इसे यहीं छोड़ जाओगे, क्या तुम नहीं जानते कि रोज़ाना सुब्ह या शाम के वक़्त इस दुन्या से रुख़्सत होने वाले के जनाज़े में पीछे पीछे चलते हो, तुम इसे क़ब्र के उस गढ़े में उतार आते हो जहां न बिछौना है, न तक्या, येह मरने वाला अपना सारा मालो मताअ (Possession) यहीं छोड़ जाता है, दोस्त अहबाब से जुदा हो कर मिट्टी को अपना ठिकाना बना लेता है, हिसाब व किताब का सामना करता है, उसी का मोहताज होता है, जो इस ने आगे भेजा होता है और जो कुछ वोह पीछे छोड़ जाता है, उस से बे नियाज़ होता है । फिर हज़रते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आंखों पर कपड़ा रख कर रोने लगे और मिम्बर (Podium) से नीते उतर आए ।[1]

1 ...حلیۃ الاولیاء، جلد: ۵، صفحہ: ۳۰۰، رقم: ۷۱۹۳ ملتقطًا

मकान की तामीर रुक्वा दी

ऐ आ़शिकाने रसूल ! येह ह़क़ीक़त है, हमें विरासत में मिलने वाला माल सामाने ऐ़शो इ़शरत नहीं, बाइ़से इ़ब्रत व नसीह़त है। आज जवान औलाद वालिद के मरने के बाद माले विरासत (Inheritance) के लिए लड़ पड़ती है, भाइयों के झगड़े होते हैं और जब माले विरासत मिलता है, तो दिल में ख़ुशियां जागती हैं, ऐ़शो इ़शरत का सामान किया जाता है मगर आह ! जैसे वालिद साह़िब अपनी ज़िन्दगी की कमाई, सारी दौलत, जाएदाद (Property), गाड़ी, बंगला वग़ैरा सब कुछ छोड़ कर क़ब्र के गढ़े (Pit of grave) में जा पहुंचे, ऐसे ही वुरसा भी एक दिन सब कुछ यहीं छोड़ कर मौत की नींद सो जाएंगे, उन्हें भी मनो मिट्टी तले दफ़्न कर दिया जाएगा।

शोबुल ईमान में हैं : एक नौजवान था, उसे विरासत में एक घर मिला, उस ने घर को दोबारा से मज़बूत़ बनाने का इरादा (Intention) किया। चुनान्चे, घर गिरा दिया गया, नए सिरे से तामीर (Construction) का काम शुरूअ़ हो गया, इसी दौरान उस के वालिद या दादाजान उस के ख़्वाब में आए और कहा : तुझे लम्बा अ़र्सा जीने की ख़्वाहिश है मगर तू ने देखा कि इस घर के रिहाइशी अब क़ब्रिस्तान में मुर्दों के पड़ोसी हैं। सुब्ह़ को जब वोह नौजवान नींद से बेदार हुवा, तो उस की आंखों से ग़फ़्लत की पट्टी खुल चुकी थी, उस ने ऐ़शो इ़शरत को छोड़ा और इ़बादत में मसरूफ़ हो गया।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

(2) बुढ़ापा मौत का क़ासिद है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह गुज़रते दिन, चलती हुई सांसें, जवानी के बाद बुढ़ापा, बालों की सियाही के बाद सफ़ेदी, इन में भी सामाने इ़ब्रत है, येह

1 ...شعب الایمان، جلد:۷، صفحہ:۴۰۴، حدیث:۱۰۷۶۹

भी मौत के क़ासिद हैं । पारह 22, सूरए फ़ातिर, आयत 37 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

اَوَلَمۡ نُعَمِّرۡكُمۡ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيۡهِ مَنۡ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيۡرُ ؕ

(پارہ: ۲۲، سورۂ فاطر: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या हम ने तुम्हें वोह उ़म्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला तुम्हारे पास तशरीफ लाया था ।

सहाबिए रसूल, सुल्तानुल मुफ़स्सिरीन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : इस आयते करीमा में नज़ीर (यानी डर सुनाने वाले) से मुराद बुढ़ापा है ।[1] रिवायत है : जब एक बाल सफ़ेद होता है, तो दूसरे बालों को केहता है : तय्यार हो जाओ ! बेशक मौत क़रीब है ।[2]

बुढ़ापा मौत के घाट उतार देता है

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इब्ने आदम की मिसाल येह है कि उस के आस पास 99 मौतें मन्डलाती रेहती हैं, अगर इन से बच जाए, तो बुढ़ापे को पहुंच जाता है, ह़त्ता कि मौत के घाट उतर जाता है ।[3]

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : यानी इन्सान के लिए अस्बाबे मौत बे शुमार (*Countless*) हैं, हर घड़ी मौत सर पर खड़ी है लेकिन अगर **अल्लाह** पाक के हुक्म से इन सब से बच गया, तो आख़िर बुढ़ापा तो आएगा ही, जिस के बाद मौत यक़ीनी (*Confirm*) है ।[4]

---

1 ...تفسیر درِمنثور، پارہ: ۲۲، سورۂ فاطر، زیرِ آیت: ۳۷، جلد: ۷، صفحہ: ۳۲

2 ...تفسیر خازن، پارہ: ۲۲، سورۂ فاطر، زیرِ آیت: ۳۷، جلد: ۳، صفحہ: ۴۵۸

3 ...ترمذی، کتاب: القدر، صفحہ: ۵۱۹، حدیث: ۲۱۵۰

4...मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द : 2, सफ़्ह़ा : 424

नसीहत के लिए सफ़ेद बाल ही काफ़ी हैं

केहते हैं : एक बादशाह ने अपने घर में एक ताबूत रखा हुवा था, जिसे देख कर वोह अपनी मौत को याद किया करता था । एक बार जब उस ने आईने में अपना चेहरा देखा, तो उसे अपनी दाढ़ी में एक सफ़ेद बाल नज़र आया, उस ने कहा : अब येह ताबूत उठा लिया जाए कि अब मुझे इस की ह़ाजत नहीं है क्यूंकि मेरी दाढ़ी में सफ़ेद बाल आ गया है जो मौत का क़ासिद है, लिहाज़ा अब मैं अपने सफ़ेद बाल को देख कर मौत को याद कर लिया करूंगा ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सफ़ेद बाल से इ़ब्रत ह़ासिल करने वाले बुज़ुर्ग

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू नूह़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में एक बूढ़े मियां को देखा, वोह मस्जिद की सफ़ाई (Cleanliness) करते और दिन रात मस्जिद ही में रेहते थे । लोगों ने बताया कि येह बूढ़े मियां मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा (Caliph) ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه की औलाद से हैं, साह़िबे औ़लाद हैं, **अल्लाह** पाक ने माल भी बहुत अ़ता फ़रमाया है, इन के पास **अल्लाह** पाक का दिया सब कुछ है मगर येह सब कुछ छोड़ छाड़ कर मस्जिद के हो कर रेह गए हैं ।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू नूह़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : लोगों की बातें सुन कर मुझे तजस्सुस (Curiosity) हुवा, मैं ने उन बूढ़े मियां के अह़वाल (Circumstances) देखना शुरूअ़ किए । चुनान्चे, मैं ने देखा : जब रात का पिछला पहर हुवा, तो वोह मस्जिद से निकले, जन्नतुल बक़ीअ़ में तशरीफ़

1...मलफ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 34, उदासी का इ़लाज, सफ़ह़ा : 17

लाए और क़िब्ला रुख़ हो कर नमाज़ पढ़ने लगे, सारी रात नमाज़ पढ़ते रहे, फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ हुवा, तो उन्हों ने दुआ़ मांगी, दौराने दुआ़ **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ اَرْسَلْتَ اِلَيَّ وَلَمْ تَاْذَنْ لِيْ فَاِنْ كُنْتَ قَدْ رَضِيْتَنِيْ فَائْذَنْ لِيْ وَاِنْ لَّمْ تَرْضَنِيْ فَوَفِّقْنِيْ لِمَا يُرْضِيْكَ

यानी ऐ **अल्लाह** पाक ! तू ने मेरी त़रफ़ अपना क़ासिद भेजा मगर येह न बताया कि तू मुझ से राज़ी भी है या नहीं। ऐ मालिके करीम ! अगर तू मुझ से राज़ी है, तो मुझे बता दे, अगर राज़ी नहीं है, तो अपनी रिज़ा वाले काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। अभी येह बूढ़े मियां दुआ़ मांग रहे थे कि इतने में एक बकरी या उस जैसा कोई जानवर आया, उन बूढ़े मियां ने उस का दूध पिया फिर उस की पीठ पर हाथ फेर कर उसे बरकत की दुआ़ दी और वापस मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आ गए।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू नूह़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : चन्द रातें मैं उन्हें देखता रहा, उन का रोज़ाना का येही मामूल था, आख़िर एक दिन मैं उन बूढ़े मियां की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, मैं ने उन्हें बताया कि मैं चन्द रातों से छुप कर उन्हें देखता रहा हूं फिर मैं ने पूछा : वोह क़ासिद कौन है जो **अल्लाह** पाक ने आप की त़रफ़ भेजा ? उन बूढ़े मियां ने फ़रमाया : एक दिन मैं आईना देख रहा था, मैं ने अपनी दाढ़ी में एक सफ़ेद बाल देखा, बस मैं जान गया कि येह **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मेरे पास मौत का क़ासिद है।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ? हम में से बहुत सारों के बाल सफ़ेद हो गए होंगे मगर अफ़्सोस ! हम इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। काश ! हम भी मौत के इन क़ासिदों की त़रफ़ तवज्जोह करें, हम भी इ़ब्रत लें और मौत के बाद वाली ज़िन्दगी (*Life After Death*) के लिए तय्यारी (*Preperation*) शुरूअ़ कर दें।

---

1 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی رسل ملک الموت قبل الوفاۃ، صفحہ: ۴۰

(3) बुख़ार भी मौत का क़ासिद है

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, रसूले हाशिमी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बुख़ार मौत का क़ासिद है और बुख़ार ज़मीन पर **अल्लाह** पाक का बनाया हुवा क़ैदख़ाना है, **अल्लाह** पाक जब चाहता है, अपने बन्दे को क़ैद कर देता है और फिर जब चाहता है, छोड़ देता है ।[1]

(4) मुख़्तलिफ़ अमराज़ भी मौत के क़ासिद हैं

ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब आदमी किसी बीमारी में मुब्तला होता है, तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का क़ासिद उस के पास होता है, ह़त्ता कि जब वोह मरज़ुल मौत में मुब्तला होता है, तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद उस के पास तशरीफ़ ला कर फ़रमाते हैं : तुम्हारे पास पै दर पै क़ासिद और डराने वाले आते रहे लेकिन तुम ने उन की कोई परवा न की, अब तुम्हारे पास ऐसा क़ासिद आया है, जो दुन्या से तुम्हारा नामो निशान मिटा देगा ।[2]

मौत का आख़िरी क़ासिद

मरवी है कि एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : तुम्हारा कोई क़ासिद नहीं है, जिस को अपने आने से पेहले भेज दिया करो, ताकि लोग मौत से डर जाएं ? ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! मेरे पास बहुत सारे क़ासिद हैं । मसलन : बीमारियां, बालों की सफ़ेदी, बुढ़ापा, देखने, सुनने में फ़र्क़ आ जाना, जब कोई

1 ...موسوعہ ابنِ ابی الدنیا، المرض و الکفارات، جلد:۴، صفحہ:۲۴۹

2 ...حلیۃ الاولیا، جلد:۳، صفحہ:۳۳۳، رقم:۴۱۶۲

इन में से किसी में मुब्तला हो कर नसीह़त नहीं पकड़ता और न ही तौबा करता है, तो मैं उस की रूह़ क़ब्ज़ करते वक़्त उसे पुकार कर केहता हूं : क्या मैं ने तेरे पास मुख़्तलिफ़ क़ासिद नहीं भेजे ? बस अब मैं आख़िरी क़ासिद हूं, मेरे बाद कोई क़ासिद नहीं और मैं आख़िरी डराने वाला हूं, मेरे बाद कोई डराने वाला नहीं ।[1]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मालूम हुवा : बुख़ार और मुख़्तलिफ़ बीमारियां भी मौत के क़ासिद हैं, दुन्या में शायद ही कोई ऐसा इन्सान हो जो कभी किसी बीमारी में मुब्तला न हुवा हो । बुख़ार, सर दर्द वग़ैरा तो मामूली बीमारियां हैं, बहुत सारे लोग मुख़्तलिफ़ बीमारियों का शिकार होते हैं । किसी को शूगर है, किसी को हेपॉटाइटस, कोई जिगर के अमराज़ में मुब्तला है, किसी को गुर्दों (Kidney) के मसाइल हैं, क्या हम इन बीमारियों से इ़ब्रत लेते हैं ? शायद नहीं लेते । बुख़ार हो, कोई मरज़ लग जाए, तो चाहिए तो येह कि हम इ़ब्रत लें, मौत को याद करें, इस बीमारी को ज़िन्दगी की आख़िरी बीमारी समझ कर गुनाहों से पक्की सच्ची तौबा करें और नेकियों में लग जाएं मगर हमारा ह़ाल उलटा है । कितने लोग हैं जो मामूली सर दर्द (Minor Headache) या बुख़ार वग़ैरा की वज्ह से नमाज़े बा जमाअ़त की सआ़दत से मह़रूम हो जाते हैं बल्कि कितने ऐसे नादान भी होंगे जो बीमारी को बहाना बना कर नमाज़ें ही क़ज़ा कर डालते होंगे । आह ! बीमारी तो मौत का क़ासिद है, येह आई थी ताकि हम ख़्वाबे ग़फ़्लत से जाग जाएं मगर हम मज़ीद ग़फ़्लत (Heedlessness) का शिकार हो जाते हैं ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی رسل ملک الموت قبل الوفاۃ، صفحہ: ۳۶

मोमिन और मुनाफ़िक़ का फ़र्क़

अल्लाह पाक के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी साबिक़ा गुनाहों से कफ़्फ़ारा हो जाती है और आइन्दा के लिए नसीहत । जबकि मुनाफ़िक़ जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल ऊंट की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया, तो न उसे येह मालूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ।[1]

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : मोमिन बीमारी में अपने गुनाहों से तौबा करता है, वोह समझता है कि येह बीमारी मेरे किसी गुनाह की वज्ह से आई और शायद येह आख़िरी बीमारी हो जिस के बाद मौत ही आए, इस लिए उसे शिफ़ा के साथ मग़्फ़िरत भी नसीब होती है । (जबकि) मुनाफ़िक़ ग़ाफ़िल येही समझता है कि फ़ुलां वज्ह से मैं बीमार हुवा था (मसलन फ़ुलां चीज़ खा ली थी, मौसिम की तब्दीली के सबब बीमारी आई है, आज कल इस बीमारी की हवा चली है वग़ैरा) और फ़ुलां दवा से मुझे आराम मिला (वग़ैरा वग़ैरा) अस्बाब में ऐसा फंसा रेहता है कि मुसब्बिबुल अस्बाब (यानी सबब पैदा करने वाले रब्बे क़ादिर व क़य्यूम) पर नज़र ही नहीं जाती, न तौबा करता है, न अपने गुनाहों में ग़ौर ।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

(5) दिनों का आना जाना भी मौत का क़ासिद है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दिन रात का आना जाना, सूरज का निकलना, फिर डूब जाना, दिन, हफ़्ते, महीने और सालों का गुज़रते जाना भी मौत का

---

1 ...ابوداود، کتاب: الجنائز، باب: الامراض المکفرۃ للذنوب، صفحہ: ۴۹۹، حدیث: ۳۰۸۹ ملخّصًا

2...मिरआतुल मनाजीह, जिल्द : 2, सफ़्हा : 424

क़ासिद है, इस में भी सामाने इब्रत है । आह ! हम दिन और रात की सुवारियों पर सुवार हो कर मौत की त़रफ़ बढ़ते चले जा रहे हैं, अ़न क़रीब वोह वक़्त आएगा जब हमारा सफ़र मुकम्मल होगा और हम अपनी मन्ज़िल यानी क़ब्र के गढ़े तक पहुंच जाएंगे । **अल्लाह** पाक कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाता है ।

يَاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ﴿۶﴾

(پارہ:۳۰،سورۂ انشقاق:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदमी बेशक तुझे अपने रब की त़रफ़ यक़ीनी दौड़ना है फिर उस से मिलना ।

❖ ह़ज़रते फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स से पूछा : तुम्हारी उ़म्र कितनी हो गई ? कहा : 60 साल । फ़रमाया : 60 साल से तुम **अल्लाह** पाक की त़रफ़ सफ़र कर रहे हो, अ़न क़रीब उस की बारगाह में पहुंच जाओगे ।[1] ❖ सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते अबू दर्दा رَضِيَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : तुम्हारी ज़िन्दगी दिनों का मज्मूआ़ है । जब एक दिन गुज़र गया, तो तुम्हारी ज़िन्दगी का एक ह़िस्सा पूरा हो गया ।[2] ❖ किसी दाना का क़ौल है : आदमी इस दुन्या पर कैसे खुश हो सकता है जबकि यहां दिन महीनों को, महीने सालों को और साल ज़िन्दगी को कम करते चले जा रहे हैं ।[3]

नेक अ़मल नम्बर 54 की तरग़ीब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मौत की याद दिल में बिठाने, क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी करने और नेक नमाज़ी बनने की सआ़दत पाने के लिए आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दावते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइए, 12 दीनी कामों में भी ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिए, नेक आमाल पर

---

1 ...لطائف المعارف، صفحہ:۴۰۵

2 ...لطائف المعارف، صفحہ:۴۰۵

3 ...لطائف المعارف، صفحہ:۴۰۶

अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिए, اِنْ شَآءَ الله अपनी ज़िन्दगी में नुमायां तब्दीली मह़सूस करेंगे। **अल्लाह** पाक ने चाहा, तो दुन्या से बे रग़बती की दौलत भी मिलेगी और अख़्लाक़ व किरदार भी संवर जाएंगे। اَلْحَمْدُ لِله शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल "**72 नेक आमाल**" सुवालात की सूरत में अ़त़ा फ़रमाए हैं, इन पर अ़मल कर के हम ब आसानी ख़ुद को नेक आमाल का आ़मिल बना सकते हैं। इन्हीं "**72 नेक आमाल**" में से एक **नेक अ़मल नम्बर 54** येह है कि क्या आज आप ने (घर में और बाहर) मज़ाक़ मस्ख़री, त़न्ज़, दिल आज़ारी और क़हक़हा लगाने (यानी खिलखिला कर हंसने) से बचने की कोशिश की ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जनाज़े के अह़काम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आइए ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**मुर्दे के सदमे**" से जनाज़े के अह़काम के बारे में सुनते हैं। पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए :

1. जब कोई जन्नती शख़्स फ़ौत हो जाता है, तो **अल्लाह** पाक ह़या फ़रमाता है कि उन लोगों को अ़ज़ाब दे, जो उस का जनाज़ा ले कर चले और जो उस के पीछे चले और जिन्हों ने उस की नमाज़े जनाज़ा अदा की।(1)
2. बन्दए मोमिन को मरने के बाद सब से पेहली जज़ा येह दी जाएगी कि उस के तमाम शुरकाए जनाज़ा की बख़्शिश कर दी जाएगी।(2)

---

1 ...فردوس الاخبار، ۱/۲۸۲، حدیث۱۱۰۸

2 ...مسند البزار، ۱۱/۸۲، حدیث: ۴۷۹۶

❖ जनाज़े में रिज़ाए इलाही, फ़र्ज़ की अदाएगी, मय्यित और उस के अ़ज़ीज़ों की दिलजूई वग़ैरा अच्छी अच्छी निय्यतों से शिर्कत करनी चाहिए। ❖ जनाज़े के साथ जाते हुवे अपने अन्जाम के बारे मे सोचते रहिए कि जिस त़रह़ आज इसे ले चले हैं, इसी त़रह़ एक दिन मुझे भी ले जाया जाएगा, जिस त़रह़ इसे मिट्टी तले दफ़्न किया जाने वाला है, इसी त़रह़ मेरी भी तदफ़ीन अ़मल में लाई जाएगी। इसी त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करना इ़बादत और कारे सवाब है। ❖ जनाज़े को कन्धा देना कारे सवाब है। ह़दीसे पाक में है : जो जनाज़ा ले कर चालीस क़दम चले, उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिए जाएंगे। एक और ह़दीस शरीफ़ में है : जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे, **अल्लाह** पाक उस की मुस्तक़िल मग़फ़िरत फ़रमा देगा।[1]

ऐलान

जनाज़े के बक़िय्या अह़काम तरबियती ह़ल्क़ों में बयान किए जाएंगे, लिहाज़ा इन को जानने के लिए तरबियती ह़ल्क़ों में ज़रूर शिर्कत कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ **शबे जुम्आ़ का दुरूद :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

1...बहारे शरीअ़त, 1 / 823 ता 158, جوہرہ،ص۱۳۹، دُرِّمُختار، ۳/۱۵۹،۱۵۸

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुम्आ़ (जुम्आ़ और जुमेरात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा, मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।**(1)

﴾2﴿ **तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّم

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पेहले और बैठा था, तो खड़े होने से पेहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिए जाएंगे ।**(2)

﴾3﴿ **रह़मत के सत्तर दरवाज़े :**

صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है, तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं ।**(3)

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

1...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ السادسۃ والخمسون، ص۱۵۱ ملخصًا

2...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الحادیۃ عشرۃ، ص۶۵

3...القول البدیع، الباب الثانی، ص۲۷۷

रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े, उस के लिए **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है**।[1]

﴿5﴾ **छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللهِ

हज़रते अहमद सावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बाज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है।[2]

﴿6﴾ **कुर्बे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया, तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه के दरमियान बिठा लिया। इस से सहाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को हैरत हुई कि **येह कौन बड़े मर्तबे वाला है**! जब वोह चला गया, तो सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, तो यूं पढ़ता है।[3]

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَى اللهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिए **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं**।[4]

1...الترغیب والترہیب ج۲ص۳۲۹،حدیث۳۱

2...افضل الصلوات علی سید السادات، الصلاۃ الثانیۃ والخمسون، ص۱۴۹

3...اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۱۲۵

4...مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی کیفیۃ الصلاۃ...الخ، ۱۰/۲۵۴، حدیث: ۱۷۳۰۵

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने इस दुआ को 3 मरतबा पढ़ा, तो गोया उस ने शबे क़द्र हासिल कर ली ।[1] दुआ येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْم

(यानी हिल्म और करम फ़रमाने वाले **अल्लाह** पाक के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** पाक है, सात आसमानों और अ़ज़मत वाले अ़र्श का रब ।)

1...تاریخ ابن عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵